IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वाल्मीकि रामायण में वैदिक यज्ञ

अंजु रानी भाोधच्छात्रा, पीएच. डी.
संस्कृत विभाग म० द० वि०, रोहतक

वैदिक धर्म की मुख्य वि"ोशता 'यज्ञ' है। पहले यज्ञ भाब्द यजन, पूजन अथवा उपासना के सामान्य अर्थ में प्रयुक्त होता था, किन्तु बाद में अग्नि में आहुति देने के साथ अनेक प्रकार की क्रियाओं से युक्त अनुश्ठान को ही 'यज्ञ' समझा जाता रहा है। श्रुति में वैदिक कर्मों को पाँच भागों में विभक्त किया गया है – अग्निहोत्र, द"ार्पुर्णमास, चातुर्मास्य, प"ाु और सोम।[1] 'गौतम धर्म सूत्र' के अनुसार यज्ञों का विभाजन निम्न प्रकार से है –

1. पाकयज्ञ संस्था : अश्टका, पार्णव, श्राद्ध, श्रावणी, आग्रहायणी, चैत्री तथा आ"वयुजी।[2]
2. हविर्यज्ञ संस्था : अग्न्याधेय, अग्निहोत्र, द"ार्पूर्णमास, आग्रायण, चातुर्मास्य, निरूढ़प"ाुबन्ध तथा सौत्रामणी।[3]
3. सोमयज्ञ संस्था : अग्निश्टोम, अत्यग्निश्टोम, उक्थ्य, 'ाोड"ाी, वाजपेय, अतिरात्र तथा आप्तोर्याम।[4]

प्रथम पाकयज्ञ – संस्था गृह्य सूत्रों के अन्तर्गत आती है। गृह्यकर्म केवल गार्हपत्य अग्नि में ही गृहस्थों द्वारा किए जाते हैं। इसमें पक्व अन्न की आहुतियाँ दी जाती हैं, परन्तु हवि तथा सोमयज्ञ संस्था का स्थान श्रौतसूत्रों में श्रौतकर्मों के अन्तर्गत है। श्रौतकर्म त्रिविधाग्नि में सपत्नीक सम्पादित होते हैं। इसमें एक से लेकर सोलह तक ऋत्विजों की आव"यकता होती है। इनके लिए वसंत में ब्राह्मण, ग्रीश्म में राजन्य और वर्शा में वै"य अग्नि का आधान करता है।[5] पुत्रवान् और कुश्णके"ाों वाला व्यक्ति ही अग्नि का आाधान कर सकता है।[6] यदि अनुश्ठान मध्य में विच्छिन्न हो जाए तो पुनः अग्नियों का आधान कर यज्ञ सम्पादन किया जाता है।

'रामायण' में कुछ वैदिक यंज्ञों का विस्तृत विवेचन मिलता है, कुछ का केवल उल्लेखमात्र है। जो निम्नानुसार है–

1. अ"वमेध यज्ञ :–

अ"वमेध यज्ञ वि"ाल यज्ञों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इस यज्ञ में एक अ"व को छोड़ा जाता था, जिसका चोरी हो जाना एक बड़ा विघ्न माना जाता था। पशु चोरी हो जाने पर अम्बरीश को पशु के स्थान पर मनुश्य भ्रुनः भोप को क्रय करना पड़ा।[7] सगर का पशु ढूंढने के लिए उसके साठ हजार पुत्रों का ना"ा हुआ।[8] राजा अग्नियों में हवि देने के लिए बुद्धिमान एवं विद्धान ऋत्विजों को नियुक्त करते थे। उन्हे होम की सूचना समय – समय पर मिलती थी।[9] राम के वनवास चले पाने पर उन्हे वन से राज्य ग्रहणार्थ लौटाने के लिए नास्तिकमत का अवलम्बन करते हुए यागादि की निन्दा करते हैं, जबकि राम इसका खंडन करते हुए प्र"ांसा करते हैं।[10]

2. अग्निश्टोम :–

'रामायण' में द"ारथ के अग्निश्टोम प्रकृति यज्ञ करने का संकेत मिलता है।[11] यह यज्ञ सोम यागों में सरल तथा सामान्य है। इस प्रकार सोमयागों में प्रकृति – याग है। इसकी तैयारी में चार दिनों का समय लगता है। पांचवें दिन सुत्या होती है। इसमें प्रातः, माध्यदिन एवं सांय तीन सवन होते हैं। तीनों सवनों में सोमाभिशव, ग्रह – ग्रहण और उसके होमादि का अनुश्ठान होता है। इसमें अग्नि तथा सोम के लिए प"ाुयाग किया जाता है।[12] यह सोमयाग 'अग्निश्टोमसंस्थ' होने से

---

[1] ऐ० ब्रा० (2.3.3.4) – स एश यज्ञः पंचविद्योऽग्निहोत्र, द"ार्पूर्णमासो चातुर्मास्यानि प"ाुः सोमः।
[2] गौ० ध० सू०(8.16) – अश्टका पार्वणः श्राद्धं श्रार्वण्याग्रहायणी चैया"वयुजीति सप्तपाकयज्ञसंस्थाः।
[3] गौ० ध० सू०(8.17) – अग्न्याणेयमग्निहोत्रं द"ार्पौर्णमासावाग्रायणं चातुर्मास्यानि निरूढ पशुबन्धः सौत्रामणीति सप्त हविर्यज्ञसंस्थाः।
[4] गौ० ध० सू०(8.18) – अग्निश्टोमोऽत्यग्निश्टोमो उक्थ्य 'ाोड"ाी वाजपेयोऽतिरामोऽप्तोर्याम इति सप्त – सोमसंस्थाः।
[5] भा० ब्रा०(2.1.3.5) – वसन्तेब्राह्मणोऽग्निमादधीत, ग्रीश्मेराजन्यो वर्शासु वै"यः।
[6] सूर्यकान्त, वैदिक को"ा, पृ० 392 – जातपुत्रः कृश्णके"ाोऽग्निमादधीत।
[7] रा० 1.60.21 – 22
[8] रा० 1.39.28
[9] कच्चिदग्निाशु ते युक्तो विधिज्ञो मतिमानृजुः।
हुतं च होश्यमार्ण च काले वेदयते सदा।। रा० 2.94.8
[10] रा० 2.101
[11] अग्निश्टोमादिभिर्यज्ञेरिश्टवानाप्तदक्षिणैः। रा० 4.4.8
[12] का० श्रौ० सू० 7.1– 10.9

'अग्निश्टोम' कहलाता है। 'अग्निश्टोम सामवेद के गीतों के नाम है। 'संस्थ' भाब्द समाप्तिवाची है। इस यज्ञ के अंत में 'अग्निश्टोम' सामन् गाया जाता है। इसका आयोजन वसंत ऋतु में होता है।[13] इसमें 'गोड"ा ऋत्विज कार्य करते हैं।[14]

3. अग्निहोत्र :–

'अग्निहोत्र' सरल तथा महत्वपूर्ण कर्म है। यह प्रातः सूर्योदय से पूर्व व सांय सूर्यास्त के पश्चात् किया जाता है।[15] रामायण में सन्ध्यावन्दन, गायत्री – जप के पश्चात् अग्निहोत्र के अनुश्ठान का विधान है।[16] जब वि"वामित्र के आश्रम में प्रातः राम और लक्ष्मण उठे तो उन्होने अग्निहोत्र करके आसन पर विराजमान वि"वामित्र को प्रणाम किया।[17] जब राम, लक्ष्मण और सीता भारभंग के आश्रम पर पहुंचे तो वे अग्निहोत्र समाप्त कर चुके थे।[18] रावण नित्य अग्निहोत्र करता था, इसलिए उसकी चिता को उसी अग्नि से प्रज्वलित किया गया।[19] रामायण में सामान्य गृहस्थी तथा ऋशियों के अग्निहोत्र करने का उल्लेख मिलता है।[20] यद्यपि अग्निहोत्र का अनुश्ठान घोर विपत्ति में फंस जाने पर भी आव"यक बताया गया है, तथापि राम के विरह में अयोध्यावासियों ने अग्निहोत्र नहीं किया।[21] अग्निदेवता उद्दे"यक प्रवृति के कारण इस कर्म का नाम अग्निहोत्र पड़ा। इसका अधिकारी वही है, जिसने त्रैताग्नि की स्थापना कर ली हो। इसमें हवि द्रव्य मुख्यतः दुग्ध है।[22] दक्षिणाग्नि नित्य प्रज्वलित रहती है।[23] यजमान नियमानुसार आह्वनीय अग्नि की ओर मध्य से गमन करता है, और पत्नी के दक्षिण में बैठता है। इसके बाद एक तुंवत्सा गो का दक्षिण की ओर से दोहन किया जाता है। दूध को दूसरे पात्र में डालकर गार्हपत्य अग्नि के अगारो पर गर्म किया जाता है। अब यजमान पला"ा को समिध् आह्वनीय अग्नि में डालता है। इसके जलने पर प्रथम हवि दी जाती है। अब पुनः सुक् से अधिक मात्रा में दुग्ध की आहुती दी जाती है। इसके बाद गार्हपत्य अग्नि में भी समिध् मौन अवस्था में डालकर प्रथम तथा द्वितीय हवि दी जाती है। इसके पश्चात् स्त्रुक् से भोश हवि का अनामिका से दो बार प्रा"ान किया जाता है। इसके बाद जल देव, पितृ तथा ऋशिणें के लिए पृथिवी पर तर्पण किया जाता है। अब तीन समिध् तीनों अग्नियों में डालने के पश्चात् यह यज्ञ समाप्त हो जाता है।[24]

4. द"र्पूर्णमास :–

'रामायण' में वसिश्ठ द्वारा द"र्पूर्णमास यज्ञों को किए जाने का संकेत मिलता है।[25] सभी इश्टियों की पकृति होने के कारण ये याग महत्वपूर्ण हैं। क्रम"ाः अमावस्या तथा पूर्णिमा के दिन अनंश्ठान होने के कारण इनका नाम द"र्पूर्णमास पड़ा। पूर्णिमा को अग्नि के लिए अश्टाद"ाकपालपुरोडा"ायाग, तथा सोम के लिए आज्यद्रव्यकउपां"ायाग तथा अग्नि एवं सोम के लिए ही एकाद"ाकपालपुरोडा"ायाग ये तीन भाग होते हैं। पूणिमा को भाग के लिए दो दिन लगते हैं, जबकि द"र्ा के लिए एक दिन प्रारंभिक क्रियाओं को एक दिन पूर्व कर लिया जाता है। इसका वास्तविक आयोजन प्रतिपदा को होता है।[26] इसमें अग्न्याधान अध्वर्यु या यजमान करता है।[27] यदि याग एक हि दिन में करने की इच्छा हो तो सभी कार्य प्रातः प्रतिपदा के दिन नहीं कर लिए जाते हैं।[28] प्रातः अग्निहोत्र के पश्चात् ब्रह्मा का वरण किया जाता है। इसके बाद यज्ञीय पात्रों का संग्रह करके तण्डुल – पेशण तथा उपाधान कर्म एक साथ किये जाते हैं। इसके बाद अग्नि तथा सोम के लिए दो पुराडो"ा तैयार किए जाते हैं।[29] आज्य की आहुतियों के पश्चात् मुख्य भाग में पुर्णिमा की प्रतिपदा को प्रथम पुराडो"ा अग्नि तथा द्वितीय अग्नि सोम को दिया जाता है। जबकि द"र्ा में द्वितीय इन्द्रग्नि को दिया जाता है। इन दोनों हवियों के मध्य एक आज्याहुति अग्नि सोम अथवा विश्णु को दी जाती है। कु"ाा अग्नि में डालकर तीन पग चलकर विश्णु क्रमण किया जाता है। अन्त में यजमान व्रत विसर्जन करता है।[30]

5. राजसूय :–

राजसूय एक मिश्रित धार्मिक आयोजन है, जिसका सम्बन्ध राजनीति से है। राजा का कर्त्तव्य राजसूय है। 'अथर्ववेद' एवं परवर्ती साहित्य में इसका उल्लेख मिलता है एवं वि"ोशताएं भी वर्णित हैं। 'रामायण' में राजा द"रथ के इस यज्ञ को करने का संकेत मिलता है।[31] इस यज्ञ से भात्रु विना"ाक मित्र की वरूणत्व प्राप्ति तथा सोम की कीर्ति प्राप्ति का उल्लेख मिलता है। इसमें बहुत से सोमयज्ञ अन्तर्भूत हैं – पवित्र, अभिशेचनीय, द"ापेय, के"ावपनीय, व्युश्टिद्विरात्र और क्षत्रधृति। जिसने वाजपेय यज्ञ न किया हो वही राजसूय यज्ञ को कर सकता है। फाल्गुन भाुल्क पक्ष की प्रतिपदा को पवित्र नामक सोम याग किया जाता है। यह

---

[13] वसन्तेऽग्निश्टोमः। का० श्रौ० सू० 7.1.5
[14] 'गोडा"ार्त्विजः। वही, 7.1.7
[15] प्रातर्जुहोत्यनुदिते। अस्तमितेजुहोति। वही, 4.1.5.1, 4.1.4.6
[16] रा० 1.34.9
[17] हुताग्निहोत्रमासीनं वि"वामित्रवन्दताम्। रा० 1.29.20
[18] अग्निहोत्रमुपासीनं भारभंगमुपागमत्। रा० 3.4.20
[19] रा० 6.111.103
[20] रा० (1.34.9), (2.36.9), (2.48.11), (2.69.13)
[21] नाग्निहोत्रण्यहूयन्त नापचन्गृहमेधिनः। रा० 2.36.9
[22] पयसा स्वर्गकामः पशुकामो वा। का० श्रौ० सू० 4.15.20
[23] नित्यो दक्षिणाग्नि। वही, 4.13.4
[24] का० श्रौ० सू० (4.13.1 – 4.15.17), (4.14.30)
[25] द"र्ा"च पूर्णमास"च यज्ञा"चैवाप्तदक्षिणाः। रा० 1.52.23
[26] पूर्वा पौर्णमासीमुत्तरां वोपसेत्। का० श्रौ० सू० 2.1.1
[27] वही, 2.1.2
[28] सद्यो वा प्रातः। वही, 2.1.16
[29] धर्मोऽसीति पुरोडा"ाो युगपत्। वही, 2.5.19
[30] व्रतं विसृजते येनोपेयात्। वही, 3.8.25
[31] राजसूया"वमेधै"च वह्नियेनाभितर्पितः। रा० 4.5.5

धर्मसेतु और धर्म से प्राप्त पुण्य का वर्णक और पापना"ाक है। यह सब होने पर भी रामचंद्र इसलिए नही कर सके क्योंकि भरत का पराम"र्ा था कि इस यज्ञ के होने पर पृथिवी पर राजव"ा का ना"ा होता है।[32] इससे क्रोध उत्पन्न होता है और पृथिवी पर वीर्यमान् पुरूशों का क्षय हुआ करता है। गुणों का उपयोग पृथिवी के ना"ा के लिए नहीं करना चाहिए। इस पर राम राजसूय यज्ञ करने का विचार ही छोड़ देते हैं।[33]

6. वाजपेय :–

'रामायण' में अयोध्या के ब्राह्मणों द्वारा वाजपेय यज्ञ से छत्र – प्राप्ति का उललेख है।[34] सोमयागों में वि"िश्ट यह वाजपेय भारदृतु में ब्राह्मणों एवं क्षत्रियों द्वारा ही किया जाता है।[35] वाजपेय के आदि तथा अनन्त के भाुक्ल पक्षों में एकाह समाप्य बृहस्पतिसव तथा ज्योतिश्टोम का विधान है। इसमें सप्तद"ा दि"ाएं होती हैं।[36] कहीं – कहीं इसका आरंभ बृहस्पतिसव से न कह कर राजाओं के प्रसंग में राजसूय यज्ञ बताया गया है। '"ातपथ ब्राह्मण' में बृहस्पितिसव से इसका अभेद बताया गया है।[37] रथ – धावन में यह आव"यक है कि यज्ञकर्त्ता विजयी रहे। कुरूक्षेत्र का रथ – धावन सूत्र साहित्य में वि"ोश प्रसिद्ध रहा है। रामायण के अनुसार रामचंद्र न द"ा – सहस्त्र वर्शों तक कई अ"वमेध तथा इससे द"ा गुणे वाजपेय यज्ञ किए।[38] इससे पा"चात्यों की यह धारणा साम्य नहीं रखती कि वाजपेय एक ऐसा प्रारभिंक संस्कार है जो पुरोहित के रूप में प्रतिश्ठित होने से पूर्व ब्राह्मण तथा अभिशेक पूर्व राजा को करना होता था।

निश्कर्श :–

'रामायण' में श्रौत एवं गृह्य दोनों प्रकार के यज्ञ वर्णित हैं। श्रौत यागों में सर्वप्रमुख 'अ"वमेघ यज्ञ' है। यह यज्ञ केवल चक्रवर्ती सम्राट बनने के अभिलाशी राजाओं द्वारा हो नहीं, अपितु पुत्र प्राप्ति, पुरूशत्व एवं स्वर्ग प्राप्ति की अभिलाशा वाले राजाओं द्वारा भी किया जाता था। यह याग विश्णु अथवा ि"ाव को प्रसन्न करने के लिए इन्हीं देवों को उद्दे"य किया जाता था। इन्द्र ने तेजप्राप्ति के लिए यह याग विश्णु को उद्दे"य करके किया था। इसके बाद 'राजसूय यज्ञ' का स्थान आता है, परन्तु 'रामायण' के समय इसका महत्व कम हो गया था। इस यज्ञ को केवल द"ारथ ही कर सके थे। राम इस यज्ञ का विचार इससे होने वाले विना"ा को देखते हुए त्याग देते हैं। अयोध्या के कुछ ब्राह्मणों द्वारा 'वाजपेय यज्ञ' करने का संकेत 'रामायण' में मिलता है। नित्य कर्मों में 'अग्निहोत्र' प्रमुख है। इसे ऋशियों के अतिरिक्त सामान्य गृहस्थ भी करते थे। अमावस्या एवं पूर्णिमा के दिन किया जाने वाला 'द"ार्पूर्णमास' भी 'रामायण' के समय प्रचलित था।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. ऐतरेय – ब्राह्मण : सायण भाश्य सहित, आनन्दाश्रम – संस्कृत– ग्रन्थावली, पूना, 1979
2. कात्यायन श्रौत सूत्र : कर्कभाश्य सहित, संपादक ए० वेबर, चौखम्बा संस्कृत सीरिज, वाराणसी, 19972
   सं० विद्याधर भार्मा भाग 1 – 2, चौखम्बा वाराणसी, 1933
3. गौतम – धर्म– सूत्र : मस्करी भाश्य सहित, सं० श्रीनिवासाचार्य, मैसूर, 1987
4. भातपथ – ब्राह्मण : सं० ए० वेबर, चौखम्बा संस्कृत सीरिज, वाराणसी, 1964
5. रामायण (वाल्मीकि) : सं० पी० एल० वैद्य आदि, भाग 1 – 7, प्राच्य विद्या मदिंर, बड़ौदा, 1960 – 1975

[32] रा० 7.44.5
[33] वही, 7.74.18
[34] वही, 2.40.20 – 21
[35] भा० ब्रा० 5.1.5.2 – 3
[36] सप्तद"ा दीक्षाः। का० श्रौ० सू० 14.1.10
[37] भा० ब्रा० 5.2.1.2
[38] रा० 7.99.9